International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

सामाजिक गतिशीलता में शिक्षा की भूमिका

कीर्तिलता साहू[1], एवं डॉ. एलिजाबेथ भगत[2]

[1]पीएचडी शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

[2]विभागाध्यक्ष एवं सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग, शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

शोध सार

यह अध्ययन सामाजिक गतिशीलता में शिक्षा की भूमिका का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। शोध द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है, जिसमें विभिन्न शोध आलेखों, पत्र–पत्रिकाओं, पुस्तकों, सरकारी रिपोर्टों तथा अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के प्रकाशनों का उपयोग किया गया है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि शिक्षा किस प्रकार व्यक्तियों और समूहों की सामाजिक, आर्थिक तथा व्यवसायिक स्थिति में परिवर्तन लाने का कार्य करती है। अध्ययन के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि शिक्षा सामाजिक गतिशीलता का एक महत्वपूर्ण साधन है, जो व्यक्ति को ज्ञान, कौशल और अवसर प्रदान करती है। इसके माध्यम से व्यक्ति बेहतर रोजगार प्राप्त कर सकता है, जिससे उसकी आय, जीवन स्तर और सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। विशेष रूप से भारतीय परिप्रेक्ष्य में शिक्षा ने वंचित वर्गों जैसे– अनुसूचित जाति, जनजाति तथा महिलाओं को मुख्य धारा में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालांकि शिक्षा की प्रभावशीलता कई चुनौतियों से प्रभावित होती है जैसे – आर्थिक असमानता, शिक्षा की गुणवत्ता में अंतर, सामाजिक भेदभाव तथा डिजिटल विभाजन आदि। इसके अतिरिक्त शिक्षा और रोजगार के बीच असंगति भी सामाजिक गतिशीलता को सीमित करती है। अतएव यह कहा जा सकता है कि शिक्षा सामाजिक गतिशीलता को बढ़ाने का एक सशक्त माध्यम है परंतु इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षा प्रणाली को आधिक समावेशी, गुणवत्तापूर्ण और रोजगारोन्मुख बनाया जाए, ताकि समाज के सभी वर्गों को समान अवसर प्राप्त हो सके।

की वर्ड्स – सामाजिक गतिशीलता, शिक्षा, सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति, आय, जीवन स्तर, शिक्षा की गुणवत्ता, सामाजिक आर्थिक असमानता

प्रस्तावना :–

समकालीन समाज में शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन और विकास का एक महत्वपूर्ण इंजन माना जाता है। यह न केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करती है, बल्कि व्यक्ति को बेहतर जीवन जीने और सामाजिक संरचना में अपनी स्थिति में सुधार करने का अवसर भी प्रदान करती है। सामाजिक गतिशीलता समाजशास्त्र की एक केंद्रीय अवधारणा है जो यह स्पष्ट करती है कि समाज में व्यक्ति या समूह अपनी सामाजिक स्थिति को किस सीमा तक परिवर्तित कर सकते हैं। यह केवल आर्थिक उन्नयन तक सीमित नहीं है बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा, शिक्षा स्तर तथा सांस्कृतिक संसाधनों को भी सम्मिलित करती है। दूसरे शब्दों में एक सामाजिक स्थिति से दूसरी सामाजिक स्थिति प्राप्त करना ही सामाजिक गतिशीलता है।

भारत में उच्च शिक्षा की स्थिति को समझने के लिए ऑल इंडिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन (AISHE) एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है। AISHE 2021–22 के अनुसार भारत का ग्रॉस एनरोलमेंट रेशियो (GER) लगभग 28.4 प्रतिशत है जो यह दर्शाता है कि 18–23 आयु वर्ग के लगभग एक तिहाई युवा उच्च शिक्षा में नामांकित हैं। विगत कुछ वर्षों में GER में निरंतर वृद्धि हुई है, जो उच्च शिक्षा तक पहुँच के विस्तार और सामाजिक समावेशन में प्रगति

के संकेत देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत 2035 तक GER को 50 प्रतिशत तक बढ़ाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

साक्षरता दर सामाजिक गतिशीलता का आधारभूत संकेतक है। सेंसस ऑफ इंडिया के अनुसार 2011 में भारत की साक्षरता दर 74.04 प्रतिशत थी, जबकि हाल के अनुमानों के अनुसार यह 80 प्रतिशत से अधिक हो चुकी है। यह वृद्धि शिक्षा के प्रसार को दर्शाती है, हालांकि ग्रामीण–शहरी और लैंगिक असमानताएँ अभी भी विद्यमान है। रोजगार और आय सामाजिक गतिशीलता के प्रत्यक्ष संकेतक हैं। नेशनल सेंपल सर्वे ऑफिस तथा नेशनल स्टेटिकल ऑफिस द्वारा संचालित पिरियॉडिक लेबर फोर्स सर्वे (पीएलएफएस) 2026 के अनुसार भारत की बेरोजगारी दर 5 प्रतिशत रही, जबकि शिक्षित युवाओं में बेरोजगारी दर अपेक्षाकृत अधिक पाई गई। यह दर्शाता है कि शिक्षा सामाजिक उन्नति का महत्वपूर्ण साधन है किंतु रोजगार अवसरों की उपलब्धता इसको प्रभावित करती है।

उपरोक्त आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा सामाजिक गतिशीलता का एक प्रभावी माध्यम है, किंतु उसकी सफलता सामाजिक–आर्थिक समानताओं तथा असमानताओं पर निर्भर करती है। अतः यह अध्ययन द्वितीयक आंकड़ों के आधार पर शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता के संबंधों का विश्लेषण करने का प्रयास करता है।

सामाजिक गतिशीलता की संकल्पना :–

पितिरिम सोरोकिन (1927) के अनुसार ''सामाजिक गतिशीलता से तात्पर्य किसी व्यक्ति का सामाजिक समूह और स्तर के भीतर एक स्थिति से दूसरी स्थिति में परिवार्तन है।'' सामाजिक गतिशीलता की व्यवस्थित और वैज्ञानिक व्याख्या सर्वप्रथम पितिरिम सोरोकिन ने अपनी प्रसिद्ध कृति 'सोशल एंड कल्चरल मोबिलिटी' में प्रस्तुत की। सोरोकिन ने सामाजिक गतिशीलता को निम्न प्रकारों में विभाजित किया:–

1. **उर्ध्वाधर गतिशीलता** – जब व्यक्ति या समूह पदानुक्रम में. ऊपर या नीचे जाता है, तो इसे उर्ध्वाधर गतिशीलता कहते हैं। यह दो प्रकार के होते हैं
   - आरोही गतिशीलता जब व्यक्ति निम्न सामाजिक स्तर से उच्च सामाजिक स्तर की ओर बढ़ता है। उदाहरण – रिक्शा चालक की बेटी प्रोफेसर बन जाए या मजदूर का बेटा डॉक्टर बन आए ।
   - अवरोही गतिशीलता – जब व्यक्ति उच्च स्तर से निम्न स्तर पर जाता है। उदाहरण – किसी व्यवसायी का दिवालिया हो जाना या किसी व्यक्ति को उच्च पद की नौकरी से निकाल देना ।
2. **क्षैतिज गतिशीलता** – जब किसी व्यक्ति का सामाजिक स्तर समान हो लेकिन स्थान या पद में परिवर्तन होता रहता है। उदाहरण – एक शिक्षक का एक स्कूल से दूसरे स्कूल में स्थानांतरण होना या एक पुलिस अधिकारी का एक जिले से दूसरे जिले में स्थानांतरण होना। यहाँ प्रतिष्ठा या वर्ग में विशेष परिवर्तन नहीं होता।
3. **अंतरपीढ़ीगत गतिशीलता** – वह गतिशीलता जिसमें दो पीढ़ीयों के बीच सामाजिक स्थिति में परिवर्तन होता है। उदाहरण – पिता किसान है और पुत्र डॉक्टर बन जाता है या माता घरेलू कामगार है और बेटी कलेक्टर बन जाती है। यह सामाजिक विकास और शिक्षा के प्रभाव को दर्शाता है।
4. **अंतः पीढ़ीगत गतिशीलता** – जब एक ही व्यक्ति अपने संपूर्ण जीवनकाल में सामाजिक स्थिति को परिवर्तित करता है। जैसे एक भृत्य का प्रमोट होकर अधिकारी बन जाना या छोटे व्यापारी का बड़ा उद्योग–पति बन जाना ।

सामाजिक गतिशीलता के निर्धारक तत्व :–

शिक्षा, व्यवसाय, आय,जाति एवं वर्ग, नगरीकरण एवं औद्योगीकरण। ये सभी सामाजिक गतिशीलता को निर्धारित करने वाले तत्व है। एम. एन. श्रीनिवास (1966) ने संस्कृतिकरण की अवधारणा द्वारा बताया कि निम्न जातियाँ उच्च जातियों के रीति–रिवाजों को अपनाकर अपनी स्थिति सुधारने का प्रयास करती हैं। यह भी सामाजिक गतिशीलता का ही एक रूप है।

सैद्धांतिक दृष्टिकोण :

सामाजिक गतिशीलता और शिक्षा का संबंध बहुस्तरीय और जटिल है। शिक्षा केवल ज्ञानार्जन की प्रक्रिया नहीं, बल्कि सामाजिक स्थिति, आर्थिक अवसर, सांस्कृतिक संसाधन और प्रतिकात्मक प्रतिष्ठा अर्जित करने का भी माध्यम है। इससे संबंधित विभिन्न समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों का इस खंड में विस्तृत वर्णन किया गया है:–

1. **कार्यात्मक दृष्टिकोण** – टॉलकट पारसंस (1959) के अनुसार, शिक्षा समाज में भूमिका आबंटन का माध्यम है। विद्यालय योग्यता के आधार पर व्यक्तियों का चयन करते हैं और उन्हें उपयुक्त भूमिकाओं में स्थापित करते हैं। किंग्सले डेविस एवं विलबर्ट मूर (1945) के अनुसार समाज में असमानता आवश्यक है, क्योंकि यह महत्वपूर्ण पदों के लिए योग्य व्यक्तियों को प्रेरित करती है। शिक्षा इस प्रक्रिया को वैधता प्रदान करती है।
1. यह दृष्टिकोण असमानताओं की संरचनात्मक जड़ों को कम करके आँकता है और मान लेता है कि सभी को समान अवसर उपलब्ध है।
2. **संघर्षवादी दृष्टिकोण** – इस दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षा सामाजिक असमानताओं को पुनरुत्पादित करती है। बाउल्स एवं गिंटिस (1976) की करेस्पॉडेन्स थ्योरी बताती है कि विद्यालय की संरचना पूँजीवादी कार्यस्थल की संरचना से मेल खाती है। जहाँ अनुशासन, आज्ञाकारिता और पदानुक्रम को बढ़ावा दिया जाता है। अल्थुसर (1971) के अनुसार शिक्षा एक वैचारिक राज्य तंत्र है, जो प्रभुत्वशाली वर्ग के हितों को वैध ठहराता है।
3. इस दृष्टिकोण में शिक्षा गतिशीलता का माध्यम कम और वर्ग–प्रभुत्व का साधन अधिक है। यह दृष्टिकोण शिक्षा की संभावित परिवर्तनकारी भूमिका को कम आँकता है।
4. **सांस्कृतिक पूँजी और सामाजिक पुनरूत्पादन सिद्धांत** – बोर्दियु के अनुसार शिक्षा प्रणाली मध्य एवं उच्च वर्ग की सास्कृतिक पूँजी को मान्यता देती है जिससे निम्न वर्ग के छात्र संरचनात्मक रूप से वंचित रह जाते हैं। 'हैबिटस' और 'फिल्ड' की अवधारणाएँ बताती हैं कि विद्यालय की भाषा व्यवहार और सांस्कृतिक मानदण्ड सभी वर्गों के लिए समान रूप से अनुकूल नहीं होते हैं। इस प्रकार शिक्षा सामाजिक गतिशीलता का अवसर प्रदान करने के साथ–साथ वर्गीय असमानताओं को भी पुनरुत्पादित कर सकती है।
5. **मानव पूँजी सिद्धांत** – मानव पूँजी सिद्वांत के अनुसार शिक्षा में निवेश से उत्पादकता और आय में वृद्धि होती है। बेकर (1964) ने शिक्षा को आर्थिक निवेश के रूप में देखा, जो व्यक्ति की आय और आर्थिक स्थिति में सुधार लाता है। यह दृष्टिकोण सामाजिक गतिशीलता को आर्थिक अवसरों से जोड़ता है और शिक्षा को उर्ध्व गतिशीलता का प्रमुख साधन मानता है।
6. **प्रतिकात्मक अंतः क्रियावादी दृष्टिकोण** – यह दृष्टिकोण सूक्ष्म स्तर पर पर शिक्षक छात्र अंतः क्रियाओं का विश्लेषण करता है। रोसेन्थाल और जेकब्सन (1968) के 'पिग्मेलियन इफेक्ट' के अनुसार शिक्षक की अपेक्षाएँ छात्रों के प्रदर्शन को प्रभावित करती हैं। लेबलिंग की प्रकिया से कुछ छात्रों को प्रतिभाशाली और अन्य को कमजोर मान लिया जाता है, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि और आगे की सामाजिक स्थिति प्रभावित होती है।
7. **आधुनिकीकरण सिद्धांत** – इस सिद्धांत के अनुसार औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के साथ शिक्षा का विस्तार सामाजिक गतिशीलता को बढ़ाता है। शिक्षा पारंपरिक स्थिति–आधारित व्यवस्था से उपलब्धि– आधारित व्यवस्था की ओर संक्रमण को प्रोत्साहित करती है।

उपरोक्त सैद्वांतिक दृष्टिकोणों से स्पष्ट होता है कि शिक्षा, सामाजिक गतिशीलता की प्रक्रिया में बहुआयामी भूमिका निभाती है। क्रियात्मकतावादी दृष्टिकोण एवं मानव पूँजी सिद्धांत शिक्षा को अवसर और प्रगति का माध्यम मानते हैं। संघर्ष–वादी और सांस्कृतिक पुनरुत्पादन सिद्धांत शिक्षा को असमानताओं के पुनरुत्पादन का साधन मानते हैं। प्रतिकात्मक अतःक्रियावाद सूक्ष्म स्तरीय प्रक्रियाओं को उजागर करता है, जबकि आधुनिकीकरण सिद्धांत शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का साधन मानता है। इस प्रकार शिक्षा सामाजिक गतिशीलता के लिए न ही पूर्णतः मुक्तिदायी है न ही पूर्णतः दमनकारी, बल्कि यह संरचनात्मक, सांस्कृतिक और आर्थिक शक्तियों के साथ अंतःक्रिया करती हुई एक जटिल प्रक्रिया है।

साहित्य समीक्षा :–

सामाजिक गतिशीलता में शिक्षा की भूमिका पर समाजशास्त्रीय साहित्य में व्यापक चर्चा मिलती है। प्रारंभिक रूप से सोरोनिक (1959) ने सामाजिक गतिशीलता को सामाजिक संरचना का एक आवश्यक घटक माना और शिक्षा को इसके प्रमुख साधनों में शामिल किया। हालांकि आलोचनात्मक दृष्टिकोण में बोर्दियु (1986) ने यह तर्क दिया कि शिक्षा केवल अवसर प्रदान करने का माध्यम नहीं है बल्कि यह सामाजिक असमानताओं को पुनरुत्पादित भी करती है। इसी प्रकार विलिस (1977) ने अपने अध्ययन में दिखाया कि श्रमिक वर्ग के छात्र शिक्षा प्रणाली में सीमित सफलता प्राप्त करते हैं, जिससे उनकी सामाजिक गतिशीलता बाधित होती है।

आधुनिक अध्ययनों में शिक्षा को सामाजिक गतिशीलता का एक प्रभावी साधन माना गया है। मंजूनाथ (2013) के अनुसार, शिक्षा व्यक्ति को आर्थिक अवसर प्रदान करती है साथ ही साथ यह सामाजिक सशक्तिकरण का माध्यम भी है। यूनेस्को (2020) की रिपोर्ट यह इंगित करती है कि शिक्षा तक समान पहुँच सामाजिक असमानताओं को कम करने और समावेशी विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। देसाई और दुबे (2012) के अनुसार भारत में शिक्षा सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा देती है, लेकिन इसका लाभ सभी वर्गों को समान रूप से नहीं मिलता। उच्च जाति और आर्थिक रूप से सक्षम वर्ग शिक्षा के माध्यम से अधिक उन्नति करते हैं, जबकि वंचित वर्गों को संरचनात्मक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) शिक्षा को सामाजिक समानता का और गतिशीलता का प्रमुख साधन मानते हुए समावेशी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर बल देती है।

उपलब्ध साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता के संबंध पर पर्याप्त अध्ययन हुए हैं, किंतु कुछ महत्वपूर्ण शोध अंतर अभी भी मौजूद है, जैसे – स्थानीय स्तर के अध्ययन का अभाव, डिजिटल शिक्षा और सोशल मीडिया का प्रभाव, महिलाओं और दलित/आदिवासी समूहों की गतिशीलता पर समग्र अध्ययन का अभाव एवं शिक्षा एवं रोजगार के बीच संबंध पर क्षेत्रीय स्तर पर सीमित शोध उपलब्ध हैं। इन सभी बिंदुओं पर भविष्य में शोध की अपार संभावनाएँ मौजूद हैं।

अध्ययन का उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्न हैं –

1. सामाजिक गतिशीलता में शिक्षा की भूमिका का विश्लेषण करना।
2. शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक असमानता के संबंध को समझना।
3. शिक्षा के माध्यम से सामाजिक उन्नति के अवसरों का अध्ययन करना ।

अनुसंधान पद्धति :–

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का है जो कि द्वितियक आंकड़ों पर आधारित है।

- **आंकडों का स्त्रोत** – अध्ययन द्वितियक आंकड़ों पर आधारित है जिसमें विभिन्न पुस्तकों, समाचार पत्रों, पत्र–पत्रिकाओं, सरकारी अभिलेखों, शोध प्रकाशनों एवं इंटरनेट जैसे स्त्रोतों से आंकड़ों का संग्रहण किया गया है।
- **अनुसंधान विधि** – अध्ययन में निगमनात्मक विधि का उपयोग किया गया है जिसमें पहले से स्थापित सिध्दांतों के आधार पर शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता के संबंधों की व्याख्या की गई है। साथ ही आगमनात्मक विधि का उपयोग भी किया गया है, जहाँ विभिन्न अध्ययनों के निष्कर्षों के आधार पर सामान्यीकरण किया गया है।

सामाजिक गतिशीलता में शिक्षा की भूमिका :–

आधुनिक समाज में शिक्षा को सामाजिक गतिशीलता का सबसे प्रभावी और संरचनात्मक माध्यम माना जाता है। यह व्यक्ति को न केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करती है, बल्कि उसे अवसरों को प्राप्त करने की क्षमता भी प्रदान करती है, जिससे वह अपने जीवन स्तर को और बेहतर बना सकता है।

1. **आर्थिक उन्नति का माध्यम** – शिक्षा सामाजिक गतिशीलता को बढ़ाने का सबसे महत्वपूर्व साधन है। बेकर (1964) के मानव पूँजी सिद्धांत के अनुसार, शिक्षा में किया गया निवेश व्यक्ति की उत्पादकता को बढ़ाता है, जिससे उसकी आय में वृद्धि होती है। उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति बेहतर रोजगार के अवसर प्राप्त करते हैं, जिससे वे निम्न आय वर्ग से मध्यम या उच्च वर्ग में स्थानांतरित हो सकते हैं। इस प्रकार, शिक्षा आर्थिक उन्नति का माध्यम बनकर उर्ध्व सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहित करती है।
2. **सामाजिक असमानताओं को कम करना** – शिक्षा समाज में व्याप्त जाति, वर्ग और लिंग आधारित असमानताओं को कम करने का एक महत्वपूर्ण उपकरण है। भारतीय संदर्भ में शिक्षा ने दलित, आदिवासी और पिछड़े वर्गों को मुख्यधारा में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सरकारी योजनाएं जैसे–छात्रवृत्ति और आरक्षण शिक्षा के माध्यम से वंचित वर्गों को अवसर प्रदान करती है। हालांकि बोर्दियु (1986) के अनुसार, शिक्षा प्रणाली कभी–कभी असमानताओं को समाप्त करने के बजाय उन्हें बनाए भी रखती है, क्योंकि उच्च वर्ग के छात्रों को बेहतर संसाधन और सांस्कृतिक पूंजी प्राप्त होती है। इस प्रकार शिक्षा, असमानताओं को कम करने का साधन है, लेकिन इसकी प्रभावशीलता सामाजिक संरचना पर निर्भर करती है।
3. **सांस्कृतिक पूँजी और सामाजिक कौशल का विकास** – शिक्षा केवल आर्थिक उन्नति का साधन नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के साँस्कृतिक और सामाजिक विकास में भी सहायक है। बोर्दियु (1986) के अनुसार शिक्षा व्यक्ति को ''सांस्कृतिक पूँजी'' प्रदान करती है, जिसमें भाषा, व्यवहार, मूल्य और सामाजिक कौशल शामिल है। शिक्षित व्यक्ति समाज में अधिक प्रभावी ढंग से संवाद कर सकता है, सामाजिक नेटवर्क बना सकता है और अवसरों का लाभ उठा सकता है। यह उसे सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने में मदद करता है। इस प्रकार शिक्षा सामाजिक पूंजी को विकसित करके सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा देती है।
4. **पीढ़ीगत सामाजिक गतिशीलता** – शिक्षा पीढ़ीगत सामाजिक गतिशीलता को बढ़ाने का प्रमुख माध्यम है। जब एक पीढी शिक्षा प्राप्त करती है तो वह अगली पीढ़ी को भी बेहतर अवसर प्रदान करती है। उदाहरण के लिए – यदि माता–पिता शिक्षित होते हैं, तो वे अपने बच्चों को भी बेहतर शिक्षा और संसाधन प्रदान करते हैं जिससे बच्चों की सामाजिक स्थिति में सुधार होता है।
5. **आधुनिक संदर्भ : डिजिटल शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता** – डिजिटल युग में शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन हुआ है। ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया ने ज्ञान तक पहुँच को आसान बनाया है। हालांकि डिजिटल विभाजन एक नई चुनौती के रूप में उभरा है, जहाँ तकनीकी संसाधनों की कमी सामाजिक गतिशीलता को सीमित करती है। इसलिए डिजिटल शिक्षा को समावेशी बनाना जरूरी है ताकि सभी वर्गों को समान अवसर प्राप्त हो सके।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि शिक्षा सामाजिक गतिशीलता का बहुआयामी साधन है, जो आर्थिक उन्नति, सामाजिक समानता, साँस्कृतिक विकास एवं पीढ़ीगत सामाजिक गतिशीलता आदि को प्रभावित करता है। हालांकि शिक्षा की प्रभावशीलता सामाजिक संरचना, आर्थिक संसाधनों और नीतिगत व्यवस्थाओं पर भी निर्भर करती है।

सामाजिक गतिशीलता और शिक्षा में चुनौतियाँ :–

शिक्षा को सामाजिक गतिशीलता का प्रमुख साधन माना जाता है, किंतु इसकी प्रभावशीलता विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और संरचनात्मक बाधाओं से प्रभावित होती है। इस खंड में उन प्रमुख चुनौतियों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है जो शिक्षा के माध्यम से सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करती हैं।

1. **शिक्षा तक असमान पहुंच** – शिक्षा तक समान पहुंच का अभाव सामाजिक गतिशीलता में सबसे बड़ी बाधाओं में से एक है। भारत में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच शिक्षा की उपलब्धता में स्पष्ट अंतर देखा जाता है। शहरी क्षेत्रों में बेहतर विद्यालय, प्रशिक्षित शिक्षक एवं आधुनिक संसाधन उपलब्ध होते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं की कमी होती है। इसके अतिरिक्त आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए शिक्षा प्राप्त करना कठिन होता है क्योंकि उन्हें विद्यालय शुल्क, किताबें और अन्य खर्च वहन करने में कठिनाई होती है। तिलक

(2002) के अनुसार, शिक्षा तक असमान पहुँच सामाजिक असमानताओं को बनाए रखती है और सामाजिक गतिशीलता को सीमित करती है।

2. **आर्थिक बाधाएँ** – आर्थिक स्थिति शिक्षा प्राप्त करने और उसे जारी रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। गरीब परिवार के बच्चों को अक्सर कम उम्र में ही काम करने के लिए मजबूर होना पड़ता है, जिससे उनकी शिक्षा बाधित होती है। उच्च शिक्षा मुख्यतः महंगी होती है, जिससे निम्न आय वर्ग के छात्र इससे वंचित रह जाते हैं। हालांकि सरकार द्वारा छात्रवृत्ति और सहायता योजनाएँ चलाई जाती हैं, फिर भी वे सभी जरूरतमंदों तक नहीं पहुँच पाती। इस पकार आर्थिक असमानता शिक्षा के माध्यम से सामाजिक गतिशीलता को सीमित करती है।
3. **सामाजिक भेदभाव** – जाति, वर्ग और लिंग आधारित भेदभाव शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता में बड़ी बाधा है। भारतीय समाज में दलित, आदिवासी और पिछड़े वर्गों के छात्रों को अक्सर भेवभाव का सामना करना पड़ता है, इससे उनकी शिक्षा में प्रदर्शन और भागीदारी प्रभावित होती है। महिलाओं के संदर्भ में भी कई क्षेत्रों में उन्हें शिक्षा के अवसर कम मिलते हैं। देसाई और दुबे (2012) के अनुसार सामाजिक भेदभाव शिक्षा के माध्यम से सामाजिक गतिशीलता को सीमित करता है।
4. **डिजिटल विभाजन** – आधुनिक युग में डिजिटल शिक्षा का महत्व बढ़ा है। लेकिन साथ ही डिजिटल विभाजन की समस्या भी सामने आई है। शहरी क्षेत्रों में इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता अधिक होती है, जबकि ग्रामीण और गरीब वर्गों में यह सीमित है। कॉविड–19 महामारी के दौरान यह अंतर स्पष्ट हुआ जब कई छात्र ऑनलाइन शिक्षा से वंचित रह गए। इस प्रकार डिजिटल संसाधनों की असमान उपलब्धता सामाजिक गतिशीलता में नई बाधाएँ पैदा कर रही हैं।
5. **नीतिगत और संस्थागत चुनौतियाँ** – शिक्षा से संबंधित नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन भी एक चुनौती है। हालाँकि भारत में कई योजनाएँ और नीतियों (जैसे NEP 2020) लागू की गई हैं, लेकिन उनका कियान्वयन सभी क्षेत्रों में समान रूप से नहीं हो पाता। इसके अतिरिक्त शिक्षा प्रणाली में भ्रष्टाचार, संसाधनों की कमी और प्रशासनिक समस्याएँ भी सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करती है।

उपरोक्त चुनौतियाँ यह दर्शाती हैं कि शिक्षा के माध्यम से सामाजिक गतिशीलता प्राप्त करना एक जटिल प्रक्रिया है इसके लिए केवल शिक्षा की उपलब्धता पर्याप्त नहीं है अपितु गुणवत्ता और समान अवसरों की प्राप्ति भी आवश्यक है।

निष्कर्ष :–

इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य सामाजिक गतिशीलता में शिक्षा की भूमिका का विश्लेषण करना था। द्वितीयक आंकड़ों एवं विभिन्न समाजशास्त्रीय सिद्धांतों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा सामाजिक गतिशीलता का एक महत्वपूर्ण और प्रभावी साधन है। शिक्षा व्यक्ति को न केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करती है, बल्कि उसे आर्थिक, सामाजिक और साँस्कृतिक रूप से सशक्त बनाती है। इसके माध्यम से व्यक्ति बेहतर रोजगार, उच्च आय और सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है जिससे उसकी सामाजिक स्थिति में सुधार होता है। इस प्रकार शिक्षा उर्ध्व सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहित करती है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि शिक्षा सामाजिक असमानताओं को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विशेष रूप से भारतीय समाज में जहां जाति, वर्ग और लिंग आधारित असमानताएं मौजूद हैं वहां शिक्षा वंचित वर्गों को मुख्यधारा में लाने का एक प्रभावी माध्यम है। आरक्षण नीति, छात्रवृत्ति और सरकारी योजनाओं ने इस दिशा में सकारात्मक योगदान दिया है। हालांकि यह भी देखा गया है, कि शिक्षा की भूमिका पूर्णतः सकारात्मक नहीं है। कई बार शिक्षा प्रणाली सामाजिक असमानताओं को कम करने के बजाए उन्हें बनाए रखती है जहाँ उच्च वर्ग के छात्रों को बेहतर संसाधन, गुणवत्ता और अवसर प्राप्त होते हैं जबकि निम्न वर्ग के छात्र इससे वंचित रह जाते हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शिक्षा सामाजिक गतिशीलता का एक शक्तिशाली साधन है, लेकिन इसकी प्रभावशीलता तभी सुनिश्चित हो सकती है जब इसे समावेशी, गुणवत्तापूर्ण और समान अवसरों पर आधारित बनाया जाएगा।

सुझाव :–

अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा रहे हैं जो शिक्षा के माध्यम से सामाजिक गतिशीलता को और अधिक प्रभावी बना सकते हैं:

1. शिक्षा तक समान पहुँच सुनिश्चित करना

- ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच शिक्षा के अंतर को कम किया जाए
- वंचित वर्गों (एसटी, एससी, ओबीसी, अल्पसंख्यक, महिलाएँ) के लिए विशेष योजनाएं लागू की जाए।
- बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष कार्यक्रम चलाए जाए।

2. शिक्षा गुणवत्ता में सुधार

- सरकारी विद्यालयों में बुनियादी सुविधाओं और शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार किया जाए।
- आधुनिक शिक्षण विधियों और तकनीकी संसाधनों का उपयोग बढ़ाया जाए।
- शिक्षकों को पर्याप्त प्रशिक्षण दिया जाए।

3. आर्थिक सहायता और प्रोत्साहन

- गरीब छात्रों के लिए छात्रवृत्ति और वित्तीय सहायता योजनाओं का विस्तार किया जाए।
- उच्च शिक्षा को अधिक सुलभ और किफायती बनाया जाए।
- शिक्षा ऋण को सरल और सुलभ बनाया जाए।

4. डिजिटल विभाजन को कम करना

- ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट और डिजिटल संसाधनों की उपबधता बढ़ाई जाए।
- छात्रों को डिजिटल उपकरण (जैसे– टैबलेट, लैपटॉप) उपलब्ध कराया जाए।
- डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा दिया जाए.

5. नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन (जैसे–NEP 2020)

- शिक्षा से संबंधित नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए
- निगरानी और मूल्यांकन प्रणाली को मजबूत किया जाए
- स्थानीय स्तर पर शिक्षा योजनाओं को लागू करने पर अधिक बल दिया जाए

यदि उपरोक्त सुझावों को प्रभावी रूप से लागू किया जाए तो शिक्षा न केवल सामाजिक गतिशीलता को बढ़ाने का प्रभावी माध्यम बन सकती है बल्कि समाज में समानता और विकास को प्रोत्साहित करने का भी सशक्त माध्यम बन सकती है।

संदर्भ :

1. All India survey on Higher Education (2024)- All India Survey on Higher Education (AISHE) 2021-22 report. Ministry of Education, Government of India.
2. Ministry of Education (2020). National Education Policy 2021. Government of India.
3. Census of India (2011). Primary census abstract : Literacy data. Office of the Registrar General & Census Commissioner, Government of India.

4. National statical office. (2026). Periodic Labour force Survey (PLFS) 2025-26. Ministry of Statistics and Programme Implementation, Government of India.
5. Sorokin, P. A. (1959), Social and cultural mobility. Free Press. (Original work published 1927)
6. Srinivas, M. N. (1966). Social change in modern India. University of California Press.
7. Davis, K., & Moore, W.E. (1945). Some principles of stratification. American Sociological Review, 10(2). 242-249.
8. Parsons, T. (1959). The school class as a social system. Harward Educational Review, 29 (4), 297-318.
9. Althusser, L. (1971) - Ideology and I ideological state apparatuses. In Lenin and Philosophy and other Essays. (pp. 127-186). Monthly Review Press.
10. Bowles, S., & Gintie, H. (1976). Schooling is capitalist America. Basic Books.
11. Bourdieu, P., & Perseron, J.-C. (1977). Reproduction in education, society and culture. Sage.
12. Backer, G.S. (1964). Human capital. University of Chicago Press.
13. Rosenthal, R., & Jacobson, L. (1968). Pygmalion in the classroom. Holt, Rinehart & Winston
14. Rostow, W. W. (1960). The stages of economic growth. Cambridge University Press.
15. Bourdieu, P. (1986). The forms of capital. In J. Richardson (Ed.), Handbook of theory and research for the sociology of education.
16. Willis, P. (1977). Learning to labour. Columbia University Press.
17. Manjunatha, K.M. (2013). Role of education in social mobility
18. UNESCO. (2020). Global education monitoring report.
19. Desai, S., & Dubey, A. (2012) - Caste in 21st century India. Economic and political Weekly, 46(11) 40-49.
20. Tilak, J.B.G. (2002). Education and poverty. Journal of Human Developonent, 3(2), 191-207.